

स्वतंत्रता आन्दोलन के पूर्व का भील जनजाति का इतिहास

नीतेश मेश्राम¹

शोधार्थी समाजशास्त्र

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. मधूलिका श्रीवास्तव

प्राध्यापक समाजशास्त्र

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश:- सन् 1857 के भील क्रान्तिकारी भीमा और नीमला नायक, विसराम, खुमान, सतनिरू आदि के नाम आज भी हमारे बीच में चर्चा का विषय बने हुए हैं। क्योंकि यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य है कि सम्पूर्ण उत्तरी भारत में जब सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम को अंग्रेजी हुकूमत ने अपनी शक्ति से कुचल दिया था, तब भी निमाड़ के लोगों में विशेष कर भील-भिलालों ने चार साल बाद तक सन् 1861 ई. तक अंग्रेजी हुकूमत से पंगा लिया था। इस अंग्रेजी शासन के संघर्ष में अनेक आदिवासी अपने प्राणों की बलि न्योछावर कर दिया तथा कइयों को काला पानी की सजा सुना दी गई एवं न जाने कितने लोगों को फांसी पर लटका दिया गया। निमाड़ में भील क्रान्तिकारियों पर महारानी विक्टोरिया के क्षमादान के बावजूद मुकदमा चला और 1861 ई. में अनेक भील क्रान्तिकारी को फांसी पर लटका दिया गया।

मुख्य शब्द - स्वतंत्रता आन्दोलन, पूर्व, भील जनजाति, इतिहास।

प्रस्तावना:- सन् 1857 की क्रान्ति के दिनों में सम्पूर्ण निमाड़ में क्रान्तिकारियों का जाल फैल गया था, जिससे निपटने के लिए गुजरात से 9वीं बंगाल इंफैन्ट्री बुलाना पड़ा था। अंग्रेज सैनिक टुकड़ी को साथ लेकर आये आर.एच. कैटिंग्स ने स्वयं भीमा नायक व उसके अनुयायियों को विनष्ट करने का दायित्व संभाला था। उसकी टुकड़ी व भीमा के अनुयायियों के बीच धावा-धावड़ी नामक पर्वतीय धारी में पहली मुठभेड़ हुई थी, जिसमें पराजय समीप देखकर भील क्रान्तिकारी समीपवर्ती जंगलों में छिप गये थे।

अंग्रेज सेना निरंतर उन क्रान्तिकारी सेना को खोजती रही और अंततः सतपुड़ा पर्वतों में स्थित रामगढ़ के उत्तर में पंच बावली नामक स्थान पर सन 1859 ई. को निर्णायक जंग लड़ा गया, जिसमें भील क्रान्तिकारी को पराजित होना पड़ा।

विश्लेषण:- 1 जुलाई सन् 1857 को इंदौर के क्रान्तिकारियों की तोपों ने इंदौर रजिडेंसी पर आग उगलना प्रारम्भ कर दिया था और अनेक अंग्रेजी अधिकारी को मौत के घाट उतार दिया। उसी दिन क्रान्तिकारियों द्वारा चलाई जा रही मह की तोपों की गर्जना मंडलेश्वर में सुनाई दी। उन दिनों मंडलेश्वर में अंग्रेजों का राज था। अंग्रेजी खजाना मंडलेश्वर के किले में था, सो आत्मरक्षा के लिए अंग्रेज अधिकारी भी वहाँ जाकर एकत्रित हो गये। इसी बीच मंडलेश्वर में यह समाचार फैल गया कि क्रान्तिकारियों द्वारा किले पर आक्रमण किया जायेगा। तब अंग्रेजों ने तमाम भीलों को एकत्रित किया और उनसे होने वाले युद्ध के लिए तैयार रहने को कहा गया, किन्तु भीलों ने अंग्रेजी पक्ष की ओर से लड़ने से स्पष्ट इनकार कर दिया। इससे सशक्त होकर अंग्रेजों ने भीलों पर से विश्वास करना बंद कर दिया। तत्काल भीलों को सुरक्षा चौकियों से हटा दिया गया, भीलों के इस रुख से अधिकारियों की नींद हराम हो गयी। आदिम, निरीह, पिछड़े कहे जाने वाले भीलों में राष्ट्रीय चेतना का ऐसा अभूतपूर्व संचार हुआ जिसका उदाहरण आजादी की लड़ाई के इतिहास में अन्यत्र नहीं मिलता। भीलों ने क्रान्तिकारियों के खिलाफ विदेशी हुकूमत के पक्ष में मोर्चा लेने से इनकार तो कर ही दिया, बल्कि इन गोरी हुकूमत के विपक्ष में खड़े होकर इनके खिलाफ तीर कमान औरी फालिये भी उठा लिये। रेवालिया नायक और उसके संबंधियों ने बड़वानी से दक्षिण-पूर्व में स्थित अकबरपुर में विद्रोह का झंडा बुलंद किया और खानदेश के गाँव-गाँव में जाकर क्रान्ति की अलख जगायी। बड़वानी व सेंधवा के बीच के टुकड़ों

में भील नायक भीमा और खोजेव सिंह ने मोर्चा संभाल लिया था। चारों ओर विद्रोह व हिंसा के स्वर गूँज रहे थे।

निमाड़ में इस प्रतिशोध ने जनक्रांति का स्वरूप धारण कर लिया था, स्थिति जब अंग्रेजों ने नियन्त्रण से बाहर जाती हुई प्रतीत हुई तो उन्हें गुजरात स्थिति अंग्रेजी फौज का सहारा लेना पड़ा। उनके सहयोग के बिना अंग्रेजी शासन क्रान्तिकारियों के दमन हेतु अभियान चला ही नहीं सकती थी। क्योंकि सारे बड़वानी राज्य में सीमावर्ती क्षेत्रों में क्रान्तिकारी फैल गये थे। इस अंग्रेज सेना के पहुँचने का समाचार जब भील क्रान्तिकारियों को मिला तो उनका दबाव बड़वानी की अपेक्षा सेंधवा क्षेत्र में अधिक बढ़ गया। इस पर खानदेश के अंग्रेज जिलाधीश ने एक चेतावनी जारी की कि व्यापारीगण अपना सारा पैसा ब्रिटिश संरक्षण में लगाये। इस चेतावनी पर सेंधवा के व्यापारीगणों ने थोड़ा-थोड़ा धन अंग्रेजी कोष में जमा करवा दिया। इस जमा धन को चोरी छिपे गोपनीय तरीके से सेंधवा से अन्यत्र ले जाया जा रहा था कि भीलों ने उस पर आक्रमण करके उस धन को लूट लिया गया। किन्तु बाद में ब्रिटिश सैनिक की सहायता से 1,20,000/- रुपये वापस बरामद कर लिये गये। उस समय निमाड़ का कार्यवाहक पोलिटिकल एजेंट के आदेशानुसार उस बरामद पैसों को सैनिक को आपस में बाँट दिया गया।

खरगोन व उसका समीपवर्ती क्षेत्र क्रान्तिकारियों का प्रमुख क्षेत्र बन गया था। इन गतिविधियों को दबाने के लिए होलकर सिपाहियों का एक दल खरगोन भेजा गया, जिसमें 150 सिपाही थे इस टुकड़ी के 30 सिपाही कैटिंग ने अपने पास रख लिए व दिलशेरखान को हिदायत दी गई कि वह विद्रोहियों को वार्ताओं में उलझाये रखे। तत्कालीन सूचना से ऐसा प्रतीत होता है कि दिलशेर खान की सहानुभूति ब्रिटिश कम्पनी के साथ न होकर क्रान्तिकारियों तक अंग्रेजों को भ्रम में रखा और क्रान्तिकारियों के साथ थी, उसने तक अंग्रेजों की गोपनीय सूचनायें पहुँचा दी। इस पर 500 क्रान्तिकारियों का एक सशक्त दल सुनिश्चित खबर मिलने पर, भीकन गाँव में एकत्रित हो गया। दिलेश्वर खान को तत्काल वक्षी खुमान सिंह वापस बुला लिया। तदंतर 100 यूरोपीय सिपाहियों की टुकड़ी खरगोन की तरफ रवाना हो गयीं। इस टुकड़ी के खरगोन पहुँचने के पूर्व क्रान्तिकारी खरगोन के शिविर पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने महल की दिवारों को ध्वस्त कर दिया। इस आक्रमण से ब्रिटिश सैनिक भयभीत हो गये।

क्रान्तिकारियों ने मूलतः सैनिक उपयोग की वस्तुओं को ही छीना था। निश्चय ही आम नागरिकों को उन्होंने परेशान नहीं किया। खरगोन के समान ही समीपवर्ती छोटे-छोटे कस्बों में भी विद्रोह की ज्वाला भड़की। वहाँ के मण्डलोई रघुनाथा सिंह स्वयं क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया। उसने अपनी भील सेना को एकत्रित कर वहाँ के वहिवटदार को हटा दिया। देखते ही देखते क्रान्तिकारियों की संख्या 3000 हो गयी, जिसमें तमाम भील सिपाही और 200 बंजारे अपनी बैलगाड़ियों सहित आ मिल थे। उधर बड़वानी के क्षेत्र में भीमा नायक व उसके सहयोगी भीलों ने अंग्रेजी शासन को नाकों चने चबवा रखे थे। अंग्रेजों ने भीमा की गिरफ्तारी पर पाँच रुपये का पुरस्कार घोषित किया था। क्रान्तिकारियों ने भील-भिलालों तथा मडलोइयों से भी कहा कि वे भी विद्रोह में सम्मिलित हो जाए। इस पर अनेकों भील-भिलालों क्रान्तिकारियों के साथ आ मिले। जब सन 1858 में अंग्रेजी की सत्ता

खरगोन व बरूड की घटनायें अभी ताजा ही थी। अतः उनकी पुनरावृत्ति को रोकने के लिए अंग्रेज सैनिक अधिकारी आर.एच. केटिंग ने स्वयं भीमा नायक की शक्ति नष्ट करने का बीड़ा उठाया। वह अपनी फौज के साथ जिसमें 218 सैनिक थे, उस पर्वतीय अंचल की ओर बढ़ा, जहाँ भीमा नायक ने अपनी सत्ता स्थापित कर लिया था। उन दिनों भीलो ने धोली बावली को अपना केन्द्र बना रखा था। इस सूचना को पाकर अंग्रेज सैनिक भील क्रांतिकारियों के केन्द्र धोली बावली को घेर लिया। भील अचानक हुये आक्रमण से घबरा उठे। 60 भीलों ने जमकर मुकाबला किया। वे फायर करते हुए पहाड़ी पर चढ़ते चले गये। अंग्रेजी सैनिक उनका पीछा करने का साहस नहीं जुटा पाई। भीलों के चले जाने के बाद उनके पद चिन्हों को खोजते हुए अंग्रेज पंचनाला जा पहुंचे। उन्होंने रामगढ़ के उत्तर में एक गाँव के समीप पंच बावली नामक स्थान पर अपना शिविर लगाया, भीलों के शिविर से आवाज से केटिंग को संकेत मिला कि भीलों का दल समीप ही अपना डेरा डाले है। अगले दिन उन्हें घेर लिया गया तभी सर्वप्रथम भीलों ने उन पर फायर करके उनके रिसालेदार को घायल कर दिया। बस इसी फायर से दोनों पक्षों में घमासान युद्ध छिड़ गया अंततः भील लोग पहाड़ी की झाड़ियों का सहारा लेकर बच निकले लेकिन चार लोगों को अंग्रेजों ने पकड़ लिया, जिसमें भीमा नायक की वृद्ध माँ भी थी। जिस मंडलेश्वर की जेल में ले जाकर बंद कर दिया और वही उसी जेल में उसकी मौत हो गयी। इस समाचार की सुनकर मंडलेश्वर जेल से कुछ भील क्रांतिकारी भाग गये। बाद में कुछ क्रांतिकारी पकड़ भी गये, जिन्हें बाद में फाँसी पर लटका दिया गया। शेष बचे मायाराम, मेहबूब उल्ला, गुलाब खो, जवाहर सिंह, फुन्ता, कईम खो, बहादुर सिंह, नूना देवी, मंजी शाह, सरजुद्दीन खो को राष्ट्रद्रोह के अपराध में काला पानी भेज दिया गया। भारत में ऐसे आदिवासी रणबाँकुरों की कमी नहीं है, कि जिन्होंने आजादी की इस लड़ाई में अपने प्राणों की बलि दे दीं। पठारों में बसी जनजातियों ने अप्पा साहब तथा तात्याटोपे जैसे अंग्रेजी हुकूमत के विरोधियों को न केवल शरण दी, बल्कि उन सभी की यथासम्भव सहायता भी की। नवम्बर 1817 को नागपुर के युद्ध के परिणामस्वरूप, पराजय के पश्चात कम्पनी सरकार की योजनास्वरूप अप्पा साहब को गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हें इलाहाबाद में कड़ी सुरक्षा के बीच जेल में रखा गया। कम्पनी सरकार ने अप्पा साहब को बंदी बनाने वाले व्यक्ति को दो लाख का इनाम और दस हजार रुपये वार्षिक आय वाली जागीर प्रदान करने की घोषणा की। “किन्तु इस इनामी गद्दारी के लिए कोई भी व्यक्ति आगे नहीं आया।” महादेव के पहाड़ियों के गोड़ प्रदेश में अप्पा साहब निरापद थे। इन लोगों की योजना देवगढ़ दुर्ग पर कब्जा करने की थी। लेकिन लौड़ी युद्ध में अंग्रेजी फौज ने उन्हें शिकस्त दे दी। गोँड जमींदारों ने सोनेफर के जागीरदार चैनशाह और प्रतापगढ़ के जागीरदार राजबा शाह ने केवल अंग्रेजों बैरी के अप्पा साहब के प्रश्रय दिया, वरन उन्हें सैनिक सहयोग देकर कम्पनी सरकार का कोप भी झेला। इस प्रतिरोध के अपराध में कम्पनी सरकार ने दोनों सामंतों को बंदी बनाकर चादाँ जेल भेज दिया। इन दोनों आदिवासी सरदारों को कम्पनी सरकार ने जहर देकर मार डाला। मगर चैन शाह और राजबा शाह स्वामिभक्ति और देशप्रेम की ऐसी इबारत लिख गये, जिसकी शोध आज भी मिटी नहीं है। तातिया भील ने भी अपने शौर्य से अंग्रेजी सरकार को छंकाने में कोई कोर कसर नहीं उठा रखा। इस स्वतन्त्रता संग्राम में अनेक आदिवासी ने अपने प्राणों की बलि देकर, अपने आपको इतिहास के पन्नों में अमर कर दिया।

निष्कर्ष:

इन सत्याग्रह के नायकों में भीली जनजाति के नायक भीमा नायक, तातिया भील, गोड़ सरदार, विष्णु सिंह और कोरकू नेता गंजनसिंह का

उल्लेख लोकगीतों में हुआ है। एक आदिवासी देश-भक्ति गीत में आजादी की लड़ाई का वृतांत इस तरह व्यक्त हुआ है -

पालाड़ी पाल तड़ा रेयो न आना, पालाड़ी पाल तड़ा रेयो ना
इमारो बेगा दाकी रो बेटा, इमारो बेगा दाकी रो।

गांधी ना मदद ते दाका रो दाई, गांधी न देशो ते दाका रो दाई
चुड़ो सो सिदो नोरेनी दड़ि, गांधी ना देशो वे काका रो।

इमारो बेगा दाकी रो बेटा, इमारो बेगा दाकी रो।

नेहरू ना देशो ते दाका रो दाई, नेहरू ना देशो तो दाका।

इमारो बेगा दाकी रो बेटा, इमारो बेगा दाकी रो।

गांधी ना देशो ते दाका रो दाई, इमारो बेगा दाकी रो बेटा।

बेनायो मदद से दाकी रो बेटा, चुड़ो सिदो नोरेनी दायो।

विष्णु ना मदद ते दाका रो दाई, घोड़ा डोंगरी दाका रो दाई।

अर्थात् माँ पुत्र से कहती है - हे! बेटा तुझे कहाँ जाना है! हे! माँ, मुझे आजादी की लड़ाई में गाँधी, नेहरू की मदद करने जाना है। तुम मुझे सीधा (आटा, दाल, नमक) आदि बाँध दो। इसी प्रकार बेटा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की मदद करने की बात अपनी माँ से कहता है।

संदर्भ :-

1. पी. आर. नायडू - 'भारत के आदिवासी (विकास की मान्यताएँ)', राधा पब्लिकेशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 1997
2. हरिराम मीणा - 'आदिवासी लोक की यात्राएँ', भारतीय ज्ञानपीठ इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड नयी दिल्ली, संस्करण 2016
3. रावेन्द्र कुमार साहू - 'उत्तर समय में आदिवासी विमर्श', ए.के. पब्लिकेशन, शाहदरा, दिल्ली, संस्करण 2015
4. महाश्वेता देवी - 'जंगल के दावेदार', राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2016
5. पुष्पेन्द्र शास्त्री - म.प्र. संदेश, अगस्त 1987